पूर्वपरिषदीय परीक्षा– 2016–17
कक्षा – 12
विषय – हिन्दी (केन्द्रिक)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक 100

निर्देश : इस प्रश्न पत्र में तीन खण्ड हैं - क ख और ग। सभी खण्डों के उत्तर लिखना अनिवार्य है। कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खंड - 'क'

1. निम्न लिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (1X5 =5)

इतने ऊँचे कि जितना उठा गगन है
देखो इस सारी दुनिया को दृष्टि से
संचित करो धरा, समता का भाव दृष्टि से
जाति भेद की, धर्मदेश की
काले गोरे, राग द्वेष की
ज्वालाओं से जलते जग में
इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।
लो अतीत में उतना ही जितना पोषक है।
जीर्ण शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है
तोड़ो बंधन, रूके न चिंतन
गति जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के शाश्वत प्रवाह में इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।

(क) जग को कौन - सी ज्वालाएं जला रही हैं?
(ख) कवि जग से कितना ग्रहण करने का आग्रह करता है?
(ग) जीवन का शाश्वत सत्य क्या है?
(घ) मृत्यु का द्योतक कौन -कौन सी चीजें हैं?
(ङ) इस कविता का मूल भाव क्या है?

2. निम्न लिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के जवाब दिजीए- (15)

उन्नीसवीं शताब्दी में यह राष्ट्रीय जागरण संपूर्ण भारतमें किसी - न किसी रूप में अभिव्यक्त हो रहा था, जिसमें भारतीयता के साथ आधुनिकता का संगम था। स्वामी विवेकानंद ने तो अमेरिका, इंग्लैंड आदिदेशों से भारत लौटकर पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों के सम्मिलन से भारत को आधुनिक बनाने का स्वप्न देखा था। उन्होंने माना कि भारत और पश्चिम की मूल गति एवं उद्देश्य भिन्न हैं, परंतु भारत को जगाना होगा, कुसंस्कारों एवं जाति- विद्वेष को त्यागना होगा, शिक्षित होकर देश की अशिक्षित, गरीब जनता को ही 'दरिद्रनारायण' मानकर उनकी सेवा करनी होगी, उनका उत्थान करना होगा। विवेकानंद का मत था कि भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। यहाँ गरीबी अपराध एवं पाप नहीं है तथा दरिद्रों की अपेक्षा धनियों को अधिक प्रकाश की जरूरत है। वे चाहते थे कि हम नीच, अज्ञानी,